शेख़ फ़रीद – सबद ६७

कलर केरी छपड़ी आइ उलथे हंझ ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८१

कलर केरी छपड़ी आइ उलथे हंझ ॥
चिंजू बोड़न्हि ना पीवहि उडण संदी डंझ ॥६४॥

सार: ज्ञानी व्यक्ति क्षणभंगुर संसार में रहते हुए भी उससे प्रभावित नहीं होता। वह समझते हैं कि भ्रम यह नहीं है कि कुछ भी अस्तित्वहीन है बल्कि यह है कि कुछ भी शाश्वत,लगाव रखने योग्य नहीं है। कर्म करते समय उनका बंधन का भाव हल्का हो जाता है, ठीक वैसे ही जैसे कोई हाथ बिना कसकर पकड़े सहारा देता है। इस दृष्टि से संसार न तो शत्रु है और न ही शरण, यह क्षणिक प्रतिबिंब मात्र है। सुख और दुःख दोनों ही अस्तित्व के सार को परिभाषित नहीं करते। केवल निर्मल चेतना ही शेष रहती है जो समस्त अनित्यता को प्रकट होने और अंततः धुंधला हो जाने देती है।

कलर केरी छपड़ी आइ उलथे हंझ ॥
हंस छोटे, खारे और क्षारीय तालाब पर उतरे हैं। यह प्रतीक है कि एक जागृत व्यक्ति इस नश्वर, मायावी संसार का हिस्सा होते हुए भी इससे प्रभावित नहीं होता।

चिंजू बोड़न्हि ना पीवहि उडण संदी डंझ ॥६४॥
वह अपनी चोंच डुबोते तो हैं पर पानी नहीं पीते क्योंकि उनके मन में उड़ान भरने की तीव्र लालसा रहती है। यह दर्शाता है कि यद्यपि एक प्रबुद्ध विवेकी चेतना भौतिक जगत में विद्यमान रहती है मगर वह नकारात्मकता को ग्रहण करने से इनकार करती है और उसका ध्यान केवल एकत्व पर केंद्रित रहता है। (६४)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद कहते हैं कि एक जागरूक विवेक दुनिया में मौजूद रहता है बिना उससे परिभाषित हुए। यह टकराव, इच्छा और गिरावट के नकारात्मक तत्त्वों से, व्यावहारिक पहचान में घर करने दिए

बग़ैर बर्ताव करता है। इंद्रियां काम करती हैं, मन जवाब देता है लेकिन सतह के नीचे, एकत्व का लगातार एहसास रहता है। यह एहसास एक केंद्र की तरह काम करता है जिसके चारों ओर सभी कर्म उस सबसे बड़े स्रोत की ओर बढ़ते हैं, धीरे-धीरे अलगाव के सभी भ्रमों को समाप्त करते हैं और एकत्व की गहन भावना को विकसित कर बर्ताव करता ते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com